पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.03.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-20 चैत्र-2082 दयानन्दाब्द 202 16 मार्च से 31 मार्च 2026 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.03.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

के तत्वावधान में

अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव के 95वें बलिदान दिवस पर

संगीत संध्या : एक शाम शहीदों के नाम

सोमवार, 23 मार्च 2026, शाम 4:30 से 7:30 बजे तक, स्थानः आर्य समाज सन्देश विहार पीतमपुरा, दिल्ली-34, (निकट-नेताजी सुभाष पैलेस मैट्रो स्टेशन)

मुख्य अतिथिः श्री तिलकराम गुप्ता (विधायक), श्री अजय रवि हंस (पार्षद), श्री आनन्द चौहान (निदेशक एमेटी शिक्षण संस्थान)

अध्यक्षता- श्री सुरेश आर्य (राष्ट्रीय मन्त्री, के.आ.यु.प.) विशिष्ट अतिथि- श्री मदन खुराना (वरिष्ठ समाज सेवी)

गायक कलाकार- नरेन्द्र आर्य सुमन, गौरव आर्य व प्रवीन आर्या 'पिंकी'

गरिमामयी उपस्थिति

प्रो. महावीर आर्य
श्री सुरेन्द्र गुप्ता
श्री देवेन्द्र आनन्द
श्री नरेन्द्र कस्तूरिया
श्री विजेन्द्र आनन्द
श्री यज्ञदत्त आर्य
श्री धर्मदेव खुराना
श्री व्रतपाल भगत
श्री सोहन लाल आर्य
श्री प्रेम सचदेवा
श्री जीवन लाल आर्य
श्रीमती राधा भारद्वाज
श्रीमती डिम्पल भंडारी
श्रीमती सीमा ढींगरा
श्री ओम सपरा
श्री वेद प्रकाश आर्य
श्री सुशील बाली
श्री आदर्श आहुजा
श्री प्रवीन तायल
श्री अरूण आर्य
श्री ओमप्रकाश गुप्ता
श्री राजीव आर्य
श्री संजीव गर्ग
श्री सतीश आर्य
श्रीमती किरण सेठी
श्री अमरसिंह सहरावत
श्री रवि चड्डा
श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता
श्री सुनील गुप्ता
श्रीमती स्वर्णा सेतिया
डॉ. रचना चावला
प्रो. करूणा चांदना
श्री नरेश खन्ना
श्रीमती सोनल सहगल
श्रीमती कृष्णा पाहुजा
श्री नरेन्द्र अरोड़ा
श्री आर.पी. सूरी
श्री अमरनाथ बत्रा
श्री सोमनाथ पुरी
श्री देवेन्द्र दहिया
श्री संजीव महाजन
श्री प्रदीप गुप्ता
श्रीमती प्रभा आर्या
श्रीमती सुनीता बुग्गा
श्री कृष्ण कुमार यादव
श्री सत्यानंद आर्य
श्री डालेश त्यागी
श्री रामकुमार सिंह आर्य
श्री यशोवीर आर्य
श्री ओमप्रकाश नांगिया
श्री विजय कुमार ढींगरा
श्री सुदेश डोगरा
श्री सुधीर वर्मा
श्री मैथिली शर्मा
श्रीमती मीना आर्या
श्री सुरेन्द्र कोछड़

ऋषि लंगरः रात्रि 7.30 बजे, प्रबंधकः वरूण आर्य, रोहित कुमार, शिवा टांक- आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

निवेदकः-

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	देवेन्द्र भगत	दुर्गेश आर्य	डॉ. विशाल आर्य
संयोजक	महामंत्री	राष्ट्रीय मंत्री	प्रधान आर्य समाज	मंत्री आर्य समाज
9810117464	9013 13 7070	9958889970	9868664800	9810894418
धर्मपाल आर्य	**इन्द्रा आहुजा**	**सरला बत्रा**	**अनीता आनंद**	**नीरज गर्ग**
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	मंत्रिणी स्त्री समाज	कोषाध्यक्ष	प्रधाना, स्त्री समाज	कोषाध्यक्ष समाज

बलिदान दिवस पर–

रक्तसाक्षी पंडित लेखराम जी के बलिदान से प्रेरणा लेकर उनके अनुरुप अपना जीवन बनाना हमारा कर्तव्य है

– मनमोहन कुमार आर्य

वर्ष 1897 की 6 मार्च को पं. लेखराम जी का 129 वां बलिदान दिवस होने के कारण उनके जीवन पर विचार कर उनसे प्रेरणा ग्रहण करने का अवसर है। पं. लेखराम जी का आरम्भिक जीवन साधारण मनुष्यों की भांति ही था परन्तु ऋषि दयानन्द वा वेदों के विचारों के स्पर्श व उन पर उनकी अद्भुत श्रद्धा व भक्ति सहित उसके लिए अपने प्राणों को अर्पित कर देने के कारण आज वह वैदिक धर्म पर शहीद हुए बलिदानियों में शिखरस्थ स्थान पर हैं। बलिदान दिस पर उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उनके गुणों को अपने जीवन में धारण करने पर विचार करने का दिन है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य मात्र अर्थ प्राप्ति करना तथा उससे सुख–भोग की सामग्री एकत्रित करना ही नहीं है अपितु संसार के उत्पत्तिकर्ता ईश्वर व एकदेशीय सूक्ष्म एवं चेतन जीवात्मा के सत्यस्वरूपों को जानकर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करते हुए शुभ गुणों को धारण की आत्मा का कल्याण करना है। इसके साथ ही ईश्वर का साक्षात्कार कर मोक्ष की प्राप्ति करना भी मनुष्य जीवन का उद्देश्य है। पण्डित लेखराम जी के जीवन काल में विधर्मी मिथ्या ज्ञान व अविद्या के सहारे वैदिक धर्म का ह्रास कर रहे थे। ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत कर उसके महत्व को प्रस्तुत किया था जो इस जन्म में अभ्युदय प्राप्त कराने के साथ मृत्यु होने पर निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष कराता है। पं. लेखराम जी ने ऋषि दयानन्द की वैदिक मान्यताओं, सिद्धान्तों व उद्देश्यों के प्रचार को ही अपने जीवन का उद्देश्य बनाया था और अपनी योग्यता व पुरुषार्थ से वैदिक धर्म की महत्वपूर्ण सेवा व रक्षा की। सारा आर्य जगत् व सभी वैदिक धर्मी उनकी सेवाओं एवं बलिदान के लिए सदा–सदा के लिए ऋणी व कृतज्ञ हैं। उनके बलिदान ने यह सिद्ध कर दिया कि वैदिक धर्म के विरोधियों के पास वेद और आर्यसमाज के सिद्धान्तों की काट व उनका उत्तर नहीं है। उनकी नींव असत्य व मिथ्या ज्ञान अथवा अविद्या पर आधारित है। वह वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का न तो सामना ही कर सकते हैं और न आक्षेपों का उत्तर ही दे सकते हैं। पं. लेखराम जी के बलिदान ने विपक्षियों व विरोधियों की सैद्धान्तिक दृष्टि से पराजय प्रदर्शित की है। हमें पं. लेखराम जी से प्रेरणा लेकर ऋषि दयानन्द व उनके मार्ग पर चलना है। इसी से वैदिक धर्म का प्रसार होगा और हम पुण्य के भागी होंगे।

पंडित लेखराम जी सच्चे ब्राह्मण, धर्मवीर वा धर्मजिज्ञासु थे। आपका सारा जीवन सभी एषणाओं से मुक्त जीवन था। धन व भौतिक पदार्थों का आपको किंचित भी मोह नहीं था। अर्थ शुचिता का यदि आदर्श रूप देखना हो तो वह महर्षि दयानन्द, पं. लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी व पं. गुरुदत्त आदि के जीवन में मिलता है। पं. लेखराम जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रचारक विद्वान थे। पंजाब सभा व स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रेरणा से ही आपने ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित का अनुसंधान किया। इसके लिए वह उन सभी स्थानों पर गये जहां जहां ऋषि दयानन्द जी गये थे। वहां जाकर लेखराम जी ने उन व्यक्तियों की तलाश की, जो ऋषि दयानन्द के जीवन में उनसे मिले थे, उन्हें देखा था तथा उनके सम्पर्क में आये थे या उनके प्रवचनों आदि से लाभान्वित हुए थे। ऐसे व्यक्तियों का पता लगाकर आपने उनसे ऋषि के बारे में जानकारी संग्रहीत की थी। ऋषि दयानन्द के सम्पर्क में आये लोगों के संस्मरणों को पता कर उनके ही शब्दों में उन्हें लिपिबद्ध करके ऋषि का अपूर्व जीवनचरित तैयार किया था। यद्यपि आर्यसमाज में ऋषि दयानन्द के पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द, श्री गोपालराव हरि, श्री रामविलास शारदा, श्री हरविलास शारदा, मास्टर लक्ष्मण आर्य और डा. भवानीलाल भारतीय आदि विद्वानों के महत्वपूर्ण जीवनचरित विद्यमान हैं परन्तु पं. लेखराम जी ने जो तथ्यात्मक जीवनचरित दिया है वही सामग्री परवर्ती विद्वानों द्वारा लिखे गये जीवनचरित का मुख्य आधार बनी है। लेखराम जी के इस कार्य की जितनी भी प्रशंसा की जाये कम है। इसे पढ़कर पाठकों को सन्तोष व प्रसन्नता का अनुभव होता है। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि यदि पं. लेखराम जी द्वारा यह कार्य सम्पन्न न किया जाता तो आज ऋषि के जितने जीवन चरित उपलब्ध होते हैं, घटनाओं की दृष्टि से उन सबका आकार अत्यन्त संक्षिप्त व न्यून होता। इस कार्य के लिए भी सारा आर्यजगत पं. लेखराम जी का ऋणी है। न केवल यह एक ग्रन्थ ही, अपितु पं. लेखराम जी ने वैदिक धर्म व ऋषि दयानन्द की मान्यताओं एवं सिद्धान्तों के पोषक अनेक ग्रन्थों का सृजन किया है। 'कुलियात आर्य मुसाफिर' ग्रन्थ में उनकी प्रायः सभी रचनाओं को संग्रहित किया गया है। वर्तमान में भी यह ग्रन्थ परोपकारिणी सभा से उपलब्ध है।

पं. लेखराम ने देश के अनेक स्थानों पर जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। उन्होंने आर्यसमाजों की स्थापना, विधिर्मियों के आर्यों के धर्मान्तरण से रक्षा तथा अनेक धर्मान्तरित बन्धुओं को वैदिक धर्म मे प्रविष्ट कराया। उन्होंने जिस समर्पण भाव से शुद्धि व धर्मप्रचार का कार्य किया वह स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है। उन्होंने वेद विरोधी मुस्लिम विद्वानों को जो चुनौतियां दीं वही उनकी हत्या व बलिदान का कारण बनीं। इस कार्य को करते हुए उन्होंने कभी अपनी माता, धर्मपत्नी व 1 वर्ष 3 माह की अल्पायु में मृत्यु को प्राप्त पुत्र 'सुखदेव' के प्रति मोह का परिचय नहीं दिया। आप आचरण बताता है कि पंडित जी पारिवारिक मोह से ऊपर उठे हुए थे। आपकी धर्मपत्नी माता लक्ष्मी देवी जी भी आप की ही तरह वैदिक घर्म प्रेमी व ऋषिभक्त थी। आप उन्हें शिक्षित कर आर्यसमाज की प्रचारिका बनाना चाहते थे। पं. लेखराम जी की मृत्यु पर माता लक्ष्मीदेवी जी को इंश्योरेंस से बीमे की राशि मिली थी। उसे उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी को पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जी की शिक्षा व्यय के लिए दान दे दी थी। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जी परवर्ती जीवन में स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए। वह अद्भुद प्रतिभाशाली विद्वान थे। गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ उन्हीं के द्वारा स्थापित उनका स्मारक है। वैदिक वर्ण व्यवस्था की समर्थक उनकी कृति ''कायाकल्प'' एक अतीव महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसमें गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित वर्णव्यवस्था का पोषण किया गया है। पं. लेखराम जी ने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए अनेक आदर्श स्थापित किये। सभी का वर्णन यहां किया जाना शक्य नहीं हैं। हम उनके धर्म प्रेम की एक अतीव प्रेरणाप्रद घटना प्रस्तुत कर लेख को विराम देंगे।

पं. लेखराम जी को एक बार सूचना मिली कि लुधियाना के दोराहा गांव के हिन्दूओं का धर्मान्तरण किया जा रहा है। यह उनके लिए असह्य था। उन्होंने तत्काल वहां जाने की तैयारी की। मेल एक्सप्रेस रेलगाड़ी का टिकट लिया और यह निश्चय होने पर गांड़ी दोराहा रुकेगी नहीं, उन्होंने चलती रेल से कूदने का निश्चय किया। आपने अपने बिस्तर को अपने शरीर के चारों ओर लपेटकर चलती रेल से छलांग लगा दी। आपके शरीर के अनेक भागों में चोटें लगीं। आप लहुलुहान हो गये और इसी घायल अवस्था में उस स्थान पर जा पहुंचे जहां हिन्दुओं को धर्मान्तरित कर मुसलमान बनाया जाना था। जब वह वहां के लोगों से मिले तो पूछने पर उन्होंने रेलागाड़ी से कूदने की यथार्थ कथा सुनाई। यह सुनकर सभी बन्धु स्तब्ध रह गये कि कोई व्यक्ति उनके धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा कर उन तक पहुंचा है। वहां के लोग पं. लेखराम जी से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने धर्मान्तरण का अपना निश्चय त्याग दिया। स्वाभाविक है कि पंडित जी ने उसके बाद उन सभी बन्धुओं को वैदिक धर्म की महत्ता पर उपदेश भी अवश्य दिया होगा और उसके साथ ही मुस्लिम मत के अनेक अन्धविश्वासों व कुरीतियों का वर्णन भी किया होगा जिससे भविष्य में कोई उनको मूर्ख न बना सके। हमें पं. लेखराम जी के जीवन की यह घटना उनके गहरे धर्मभाव का प्रमाण प्रतीत होती है।

दिनांक 6 मार्च, सन् 1897 को एक मुस्लिम युवक ने धोखे से पं. लेखराम जी के लाहौर स्थित निवास पर सायं 7 बजे छुरे को उनके पेट में घोप कर हत्या कर दी और भाग गया था। जिस मनुष्य व समाज के पास किसी बात का उत्तर नहीं होता वह ऐसा ही कुकृत्य करता है। पं. लेखराम जी मर कर भी जीवित वा अमर हैं। वैदिक सत्य मत आज भी अपराजित है और अन्य सभी मत ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायियों द्वारा युक्ति, तर्क व प्रमाणों के आधार पर असत्य व अपूर्ण सिद्ध किये गये हैं। पं. लेखराम जी की मृत्यु पर पं. चमूपति जी और लाला लाजपत राय जी श्रद्धांजलियां प्रस्तुत करते हैं। पं. चमूपति जी के अनुसार 'वीर लेखराम की अर्थी के साथ सहस्त्रों मनुष्यों का तांता लग रहा था। लाहौर के नर–नारी इस निर्भीक युवक के बलिदान पर अत्यन्त क्षुब्ध थे। पृथिवी पर हर जगह फूल ही फूल दीखते थे। गुलाब के पानी के कंटर पर कंटर बहा दिये गये। आर्यजाति में एक नई स्फूर्ति थी, नया आवेग था। प्रतीत यह होता था कि एक धर्मवीर के बलिदान ने सम्पूर्ण जाति को नया जीवन प्रदान कर दिया है। पवित्रता का पारावार था। उत्साह ठाठें मार रहा था। साहस की बाढ़ आ गई थी। जिधर देखो, कर्मण्यता–पूर्ण वैराग्य था।' लाला लाजपत राय जी ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा है कि ''पं. लेखराम लेखनी की तलवार लेकर कार्यक्षेत्र में आया। विरोधियों की छावनी में भगदड़ मच गई। किसमें इतना साहस था कि सामने आये? उसकी लेखनी ने वही कार्य किया जो स्वामी दर्शनानन्द की लेखनी व वाणी ने मिलकर सम्पन्न किया। कुलियाते आर्य मुसाफिर उसके अथक परिश्रम का ज्वलन्त प्रमाण है। मरने वाला मर गया। निर्दयी व क्रूर हत्यारे ने अपनी गर्दन पर निष्पाप लेखराम की हत्या का पाप लिया।''

धर्मवीर पण्डित लेखराम जी ने अपनी नश्वर देह का त्याग करते हुए आर्यो को यह सन्देश दिया था, ''लेखनी व वाणी से प्रचार का कार्य बन्द न हो।'' आज आर्यों को उनकी इस वसीयत को पूरा करना है, तभी भविष्य में वेदाज्ञा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' चरितार्थ हो सकता है। हम भी अपनी अल्प सामर्थ्य एवं योग्यता से इस कार्य को कर रहे हैं।

श्रीनिवासपुरी में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन सम्पन्न

हिन्दी के विकास में कवि सम्मेलनों का अत्यधिक योगदान –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बुधवार 4 मार्च 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में आर्य समाज श्रीनिवास पुरी में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि हिन्दी के विकास में कवि सम्मेलनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी देश को जोड़ने का कार्य करती है।कठिन से कठिन बात को कवि सरल शब्दों में कह देता है और व्यंग्य भी कर लेता है। राष्ट्रीय कवि प्रो.सारस्वत मोहन मनीषी ने कविता पाठ करते हुए कहा कि जिस दिन दिल्ली ठीक हो गई देश ठीक हो जाएगा।उन्होंने व्यवस्था पर कटाक्ष किया। सत्य प्रकाश भारद्वाज ने देश भक्ति पूर्ण गीतो से समा बाँध दिया। आर्य रवि देव गुप्त ने कहा कि हमें सामाजिक समरसता के लिए कार्य करते हुए समाज को जोड़ने के लिए कार्य करना है।आचार्य महेन्द्र भाई व सुशील आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया गायिका पिंकी आर्या ने ओजस्वी गीतों से जोश भर दिया कुलदीप बृजवासी ने हास्य व्यंग्य से मनोरंजन किया। प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि आज अमर शहीद पंडित लेख राम का बलिदान दिवस है जो हिन्दू धर्म के लिए बलिदान हो गए,उन्हें शत शत नमन। निगम पार्षद राजपाल सिंह ने शुभकामनाएं प्रदान की। प्रमुख रूप से आर्य नेता राजेश मेहंदीरत्ता, जितेंद्र डावर, नरेंद्र नारंग, प्रकाश वीर शास्त्री, सुरेन्द्र गुप्ता रविन्द्र आर्य रामकुमार सिंह वेद प्रकाश आर्य अर्चना पुष्करना ओम सपरा आदि उपस्थित थे।

मुम्बई में वैदिक सिद्धांत प्रतियोगिता का सफल आयोजन

मुंबई, आर्य वीर दल, मुंबई एवं आर्य समाज सांताक्रुज़ के संयुक्त तत्वावधान में बाल प्रतिभा मंच के अंतर्गत रविवार, 25 जनवरी 2025 को वैदिक सिद्धांत एवं ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भव्य एवं सफल आयोजन आर्य समाज सांताक्रुज़, लिंकिंग रोड (प.), मुंबई में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 8.00 से 9.00 बजे तक आचार्य विनोद शास्त्री के सान्निध्य में यज्ञ के साथ हुआ। इसके पश्चात अल्पाहार एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रातः 9.30 से 11.00 बजे तक आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में कुल 40 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रश्नोत्तर क्रम अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रभावशाली रहा। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में श्रीमती जयाबेन पटेल, श्रीमती नेहा पटेल, श्री नरेन्द्र मदान एवं आचार्य विनोद शास्त्री रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन सुश्री सुकृति आर्य एवं श्री ज्ञानप्रकाश आर्य द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री हरिश आर्य जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, मुंबई) ने अपने ओजस्वी उद्बोधन से सभी को प्रेरित किया। विशिष्ट अतिथि श्री विजय गौतम जी (महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मुंबई) ने आयोजक टीम को इस सफल आयोजन के लिए बधाई दी। पुरस्कार वितरण समारोह प्रातः 11.00 से 12.00 बजे तक संपन्न हुआ, जिसमें श्री नरेन्द्र शास्त्री एवं श्री दिलीप पालीवाल ने प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में श्री कल्पेश आर्य द्वारा काव्य पाठ प्रस्तुत किया गया, जिसे श्रोताओं ने सराहा। विशेष आकर्षण के रूप में श्री गौरव मेहरा जी द्वारा प्रातः जागरण के मंत्रों का सस्वर पाठ किया गया, जिसे सुनकर सभी श्रोता आश्चर्यचकित एवं आनंदित हुए। इस आयोजन में आर्य समाज सांताक्रुज़ के श्री संदीप आर्य (महामंत्री), श्री दीपक पटेल एवं समस्त अंतरंग सदस्यों का विशेष योगदान रहा। उपस्थित सभी श्रोताओं एवं अतिथियों ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम के अंत में श्री धर्मधर आर्य ने सभी अतिथियों, आयोजकों एवं श्रोतागणों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए शांतिपाठ कराया। इसके पश्चात सभी ने प्रीति भोज ग्रहण किया।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान
आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

प्रकाशनादि का विवरण फार्म–4

1. प्रकाशन स्थान	:	आर्यसमाज, टी–176–177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली–7
2. प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
3. मुद्रक व प्रकाशक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी–176–177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली–7
4. सम्पादक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी–176–177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली–7
5. उन व्यक्तियों के नाम, पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों।	:	केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी.), दिल्ली

मैं अनिल कुमार आर्य एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 01-3-2026 **अनिल कुमार आर्य,** प्रकाशक

प्रथम चित्र में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के पूर्व प्रधान शिक्षक श्री कांत शास्त्री जी के सेवा निवृत्त होने पर अभिनंदन करते राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य, ओमप्रकाश यजुर्वेदी व प्रकाशवीर शास्त्री आदि। द्वितीय चित्र में आर्य समाज उत्तम नगर दिल्ली में आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि अनिल आर्य का अभिनंदन करते अमर सिंह सहरावत, भोपाल सिंह आर्य आदि

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 772वां वेबिनार सम्पन्न

तर्क सबसे बड़ा आचार्य विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

तर्क विवेक पूर्ण व्यवहार का आधार है—अतुल सहगल

सोमवार 02 मार्च 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में तर्क सबसे बड़ा आचार्य विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 771 वाँ वेबीनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने विषय की भूमिका प्रस्तुत करते हुए, मानव उन्नति के परिपेक्ष में इस विषय की महत्ता को सामने रखा।आजकल समाज में तर्क,वितर्क और कुतर्क बहुत प्रचलित है।प्रायः तर्क का नाम लेकर नास्तिकता का समर्थन किया जाता है अथवा उसको बढ़ावा दिया जाता है।तर्क के महत्त्व को वैदिक विचारधारा के बड़े परिपेक्ष में ही पूर्णता से समझा जा सकता है।तर्क सत्य को जानने का साधन है।वास्तव में तर्क विवेकपूर्ण व्यवहार का आधार है।तर्क बुद्धि के सही और पूर्ण प्रयोग का नाम है।वक्ता ने तर्क को ऋषि समान बताया।वक्ता ने प्रसिद्ध विद्वानों के तर्क के विषय पर वक्तव्य प्रस्तुत किये।इनमें महर्षि गौतम प्रमुख हैं जो न्यायदर्शन के प्रणेता थे।आधुनिक विद्वानों में स्वामी दयानन्द,स्वामी विवेकानन्द और आचार्य रजनीश (ओशो) के तर्क विषय पर विचार वक्ता ने सामने रखे।वक्ता ने तत्पश्चात न्यायदर्शन के सूक्त संख्या 40 को उद्धरित करते हुए तर्क की मौलिक परिभाषा प्रस्तुत की और तर्क को शंका समाधान का साधन वताया। वक्ता ने इस विषय पर अपने स्वयं के विश्लेषण और अनुभव के आधार पर जीवनुपयोगी ज्ञान और व्यवहार बिंदु बताये और उनकी चर्चा की।वक्ता ने तर्क को सत्य, असत्य और अर्धसत्य का बोथ करने का साधन बताया।इसके साथ ही वक्ता ने यह भी कहा कि तर्क को धर्म के साथ जोड़ के ही सुख, सफलता,शांति व उन्नति संभव है।यदि इसके साथ अधर्म के अंश जुड़ गए तो यही तर्क कुतर्क बन जाता है और अकल्याण का कारण बनता है।संसार के रचयिता परमेश्वर ने भी तर्क के आधार पर प्राणियों की रचना की।यही तर्क सृष्टि के संचालन और विनाश का कारण भी बनता है।कुछ नास्तिक लोग तर्क के नाम पर अपने अनुचित कार्यों को सही ठहराने का प्रयास करते हैं, लेकिन वे अंधकार में जीते हैं।जब मनुष्य अपने विवेक को प्रबल कर, बुद्धिपूर्वक विचारता है व अन्य कार्य करता है तो सत्य और धर्म का मार्गगामी बनता है।वह अपना व अन्य प्राणियों का उद्धार करता हुआ अपनी उन्नति के शिखर बिंदु – मोक्ष की दिशा में तीव्रता से बढ़ता है।परन्तु काम,क्रोध,लोभ,मोह और मद से ग्रस्त होने से मनुष्य तार्किक बुद्धि नहीं बना पाता और असत्य – अधर्म में लिप्त हो जाता है।यह बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है।वक्ता ने अपने प्रवचन में सत्य जानने हेतु चार प्रमाणों (प्रत्यक्ष,अनुमान,उपमान और शब्द) का भी उल्लेख किया और तर्क को सत्य का बोध करने का प्रमुख व्यवहारिक साधन बताते हुए इसको विज्ञान के विकास का उपकरण कहा। मुख्य अतिथि सुधीर बंसल व अध्यक्ष राजश्री यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किए।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, बिन्दु मदान, कुसुम भंडारी, रविन्द्र गुप्ता, प्रवीना ठक्कर आदि के मधुर भजन हुए।

आस्था सकारात्मक तत्व है–आचार्या श्रुति सेतिया

आस्था सकारात्मक तत्व है —आचार्या श्रुति सेतिया

सोमवार 09 मार्च 2026 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में आस्था और अन्धविश्वास विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 772 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी श्रुति सेतिया ने कहा कि आज के समय में आस्था और अंधविश्वास के बीच का अंतर समझना अत्यंत आवश्यक है। आस्था मनुष्य के जीवन का एक सकारात्मक ओर प्रेरणादायक तत्व है,जो उसे नैतिकता, धैर्य ओर आत्मबल प्रदान करती है। आस्था का आधार अनुभव, विश्वास और सकारात्मक जीवन मूल्य पर टिका होता है। उसके विपरीत अंधविश्वास वह स्थिति है जब मनुष्य बिना तर्क, बिना प्रमाण ओर बिना समझ के किसी बात को सत्य मान लेता है। अंधविश्वास अक्सर भय, अज्ञान और परम्पराओं की गलत व्याख्या से जन्म लेता है। यह व्यक्ति की स्वतंत्र सोच और विवेक को कमजोर करता है। आस्था मनुष्य को शक्ति देती है जबकि अंधविश्वास उसे कमजोर ओर निर्भर बनाता है। यदि आस्था विवेक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जुड़ी हो तो वह समाज के लिए प्रेरणादाई बनती है, लेकिन जब वही आस्था विवेक से दूर हो जाती है, तब वह अंधविश्वास का रूप ले लेती है। उदाहरण के रूप में किसी कठिन समय में ईश्वर या प्रकृति पर विश्वास रखकर धैर्य और साहस बनाए रखना आस्था है, लेकिन बीमार होने पर इलाज कराने के बजाय केवल टोना टोटका पर निर्भर रहना अंधविश्वास है। परीक्षा से पहले आत्मविश्वास और परिश्रम के साथ प्रार्थना करना आस्था है, लेकिन बिना पढ़े केवल किसी ताबीज या उपाय के सफलता की उम्मीद करना अंधविश्वास है। समाज में जागरूकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर स्वस्थ आस्था को मजबूत करना तथा अंधविश्वास से बचना आज की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि कृष्णा पाहुजा व अध्यक्ष अनिता रेलन ने भी अपने विचार व्यक्त किए परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, रविन्द्र गुप्ता, कमला हंस, संतोष धर, कुसुम भण्डारी आदि के मधुर भजन हुए।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474
से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970